बदलाव

दुनिया में हर चीज हर समय हर पल वदल रही हैं यह एक सर्व मान्य तथ्य हैं । पर कुछ लोग निहत स्वार्थ के कारण ऐसा नही मानते हैं । यह कहावत आपने जरुर सुनी होगी कि समय हर घाव को भर देता है इसका भी यही कारण है । पर इस लेख को लिखने का कारण आज के समाजिक तंत्र मे बदलाव लाने का है । अगर गौर करें ते हम पायेगे कि बदला लेने की प्रवृति हममे बहुत अधिक है पर बदलाव लाने की प्रवृति का अभाव ही अधिक दिखाई देगा ।

कारण बहुत अधिक सरल हैं कि बदलाव लाने के लिये हमें गांधी की तरह बनना होगा जो बहुत कठिन काम है । उससे भी कठिन होता है करनी व कथनी मे अंतर । बदलाव को लाना है कहने वाले वहुत मिल जायेगे, करने वाले भी मिल तो जायेंगे जो दूर दराज जगहों पर हैं और आमतौर पर एक मत नहीं होते हैं कि आगे कैसे बढा जाय । तंत्र को कैसे बदला जाय यह बहुत कठिन कार्य है । क्योंकि तंत्र से जिनको फायदा हो रहा है वह सब इसके बचाव मे जी जान से एक जुट हो कर लगे हुये हैं, पर जिनको तंत्र से नुक्सान हो रहा है कभी भी एक जुट नही होगे, कारण एकमत नही होना ।

जेसे हर बडे से बडे काम को छोटे छोटे भागो मे वाँट कर पूरा किया जाता है उसी तरह तंत्र को बदलने का काम भी धीरे धीरे ही पूरा होगा, प्रश्न यह उठता है कि कहाँ से शुरु किया जाय । इस बारे मे भी मतभेद हो सकता है पर यह सोच जरुरी है कि बहुमत का सम्मान हो तो यदि हम गणतंत्र को मानते है । तो क्यो न हम जनमत का अधिकार जनता को दे जो किसी भी नियम को बदलने की ताकत रखता हो । पर उसके लिये किसी भी प्रश्न को मतदान के लिये प्रस्तुत करने से पहले जरुरी होगा कि एक हस्ताक्षर अभियान चलाया जाय जिसपर कम से कम दस या एक लाख लोगो का एकमत होना जरुरी हो यह एक लाख लोग एक ही शहर के भी हो सकते है या दस लाख पूरे देश के भी हो सकते है यदि यह स्थानिये समस्या हो तो यह सख्यां कम भी की जा सकती है ।

हर नियम की पूरी तरह से जांच की जाय कि यह जनता के भले के लिये है या उसके सुरक्षा के लिये जरुरी है यह काम एक जन समिंतियो से हो जो किसी पार्टी के न हो, और यह समितियां की अवधी दो वर्ष से अधिक न हो ।

राज्यो को स्वयता प्रदान की जाय यह आर्थिक, समाजिक, व्यवाहारिक ही न होकर वरन देश काल पात्र पर भी खरी उतरे । यह याद रखे कि हर बदलाव का जन्मदाता एक विचार होता है ।

सरकार का आकार जितना अधिक कम होगा उतना जनता खुश रहेगी । बहुत से विभागो का कोई ओचित्य भी नही है उन्हे बन्द कर दिया जाय, जैसे आपूर्ति, रिफूजी, राशन, सहायता । जब इतने सारी सहकारी संस्थाये है जो अच्छा काम कर रही है तो सरकार इस काम मे क्यो है? हर गरीब आदमी को हर महीने कुछ आर्थिक सहायता देना अच्छा विकल्प है न कि राशनिगं को बनाय रखना जिसमे हजारो कमियां है । इससे आर्थिक व्यवस्था और मजबूत होगी ।

कानूनी नियमो को बनाने बाले, लागू करने बाले और यह देखने बाले कि काम सही हो रहा है या नही कानूनी विशेषयज्ञ भी अपना काम करने को स्वतंत्र हो । अगर कोई काम सही हो रहा है उसमे रुकावट न आयें । और हर एक को अपना अपना काम करने की छूट होनी चाहिये । नियमो को लागू करने वाले, नियमो को बनाने बालो से अलग अलग होने चाहिये । अधिकांश नियम मनाव मात्र के उत्थानव प्रात्साहनो के लिये हो ।

पुलिस व्यवस्था, पढाई, स्वास्थ, सफाई, जल, बिजली, सभी स्थानिये चुने हुये जन प्रतिनिधियो के अंत्रगत हो अधिकांश जो सभी उसी भोलोकिक दायरे मे रहते हो ।

सरकारी मकान किसी को भी न दिये जाय । पर हर एक जन को अपना अपना मकान बनाने मे पूरी मदद दी जाय । पानी बिजली की आपूर्ति का हर एक को बराबर मूल्य देना चाहिये । बिजली व जल की आपूर्ति प्राकृतिक भोलोकिक पूनर्विकरण संस्धानो से होनी चाहिये जैसे सूर्य पवन जल उर्जा इत्यादि ।
सरकार को कोई काम अपने आप नही करना है सरकार का काम कानूनी, आर्थिक, व सुरक्षा अंतरिक व बहारी बनाये रखना ही होना चाहिये । बाकी काम जनता करे इसके लिये प्रोत्साहन दिया जाय ।
देश की सुरक्षा में लगे हुये लोगो का तबादला को बाकी किसी का न हो । इस तरह से हमारे देश की काफी बचत होगी, जनता कर्मचारियो को भी परिवारिक कष्ट नही होगा ।

बदलाव के बारे मे एक महत्वपूर्ण बात आपको शायद मालूम होगी जो चीजे हम बदल नही सकते हैं उन्हे हम मान ले जो हम बदल सकते हैं उन्हे जरुर बदले और यह जानने की शक्ति भगवान हमे दें ।
बदलाव कब कहाँ कैसे क्यो और कितना इसके जबाब अलग अलग हो सकते है उन पर मतभेद भी हो सकता है पर मेरे अपने विचार मे इनके उत्तर हैं बदलाव अभी, कैसे का जबाब आपके बदलाव मे छिपा है क्यो का जबाब है क्योकि वर्तमान वह सब नही दे पा रहा है हमारी जनता को गरीबी रेखा के नीचे है । उतना ही जितना भारत को महान बनाने मे कामगार हो ।

अब हम आकड़ो की बात करेगें भारत मे करीब बारह लाख गैर सरकारी संस्थान है और उसमे कम से कम औसतन दस लोग काम करते है जो साल मे औसतन तीन करोड़ का काम करते हैं गरीबी को मिटाने के लिये । इस तरह करीब 36 लाख करोड़ का काम आप यदि इस सख्यां पर ध्यान दे 36 करोड़ कोग ही गरीबी रेखा के नीचे हैं । इस तरह औसतन एक लाख रुपये हम हर गरीब की हरीबी हटाने पर हर साल खर्च कर रहे है । पर गरीबी है कि जाने का नाम ही नही ले रही है वरन सुरसा के मुख की तरह बढती जा रही है । कारण वही पुराने तरीके से काम कर रहे है जो कामगार नही है तो जरुरत है बदलाव की सोच मे करने मे । यादि हम सीधे ही गरीबो को ही सिर्फ हर माह 2000 रुपये केवल पाँच साल के लिये दे कि तुम अपने पैरो पर खड़े होने के लिये करोगे तो ही यह रकम तुम्हे मिलेगी तो कैसा रहे ? या आप भी सोच सकते कोई नया तरीका । सरकार इससे कहीं ज्यादा खर्च गरीबी हटाने मे खर्च कर रही हैं पर अधिकांश बीच मे ही बट जाता है गरीबो को गरीबी हटाने बालो को अमीर बनाने मे निपट जाता हैं । प्रयोजन होना जरुरी होगा तभी यह रुपया मिलेगा । हमारे गावों की सख्या मात्र छ लाख है तो हर गाँव मे दो गैर सरकारी संस्थान काम कर सकते है । ज्ब हम आकड़ो की बात कर ही रहें है तो यह बताना जरुरी है कि विश्सवत आकड़ो की हमारे देश मे कमी है समस्यायें अंकलन से नही मिटेगीं वह तथ्यो से ही मिटगी । आकड़ो न हो तो, वह मात्र कल्पना ही हो सकती है सच्चाई नहीं । इसीलिये हमारी अधिकांश योजनायें सफल नही होती है अटकलो पर आधरित हल अटकले ही मिटा पाते हैं सच्ची गरीबी नही ।

हर जन जो सरकार से या गैर सरकारी सूत्रो से सहायता पाता है उससे भविष्य मे दो जनो की मदद करोगे अपनी ही जाती के जरुरत मन्दो की, यह असवासन मदद देते समय ही क्यो न ले लिया जाय तो कैसा रहे ? गरीबो की मदद के समय भी इसी तरह के असवासन की आवश्यकता हैं । हमारे देश मे दानियो की कमी नही है पर दान देते समय हम यह उम्मीद नही करते है कि दान लेने वाले से कि भविष्य मे यह भी देने बाला बनेगा । हम दया करुणा दिखाते हैं जब कि समय की जरुरत दया करुणा सिखाने की है । हम मात्र प्रर्दशक, समस्याओ को मिटाने बाले बने रहें । वरन पथ प्रर्दशक बनकर उन्हे समस्याओं को स्वयं अपननाने को कहें तकि वह भी भविष्य में दूसरो के पथ प्रर्दशक बने ।

अंत मे नेताओ को अपने विचारो पर राज्य न करने दें उन्हे अपना आर्दश न माने खुद सोचें तभी सही मानो मे आप अपनी समस्याओ को हल कर पायेगें ईसी तरह पुलिस ब जन सेवको के सहारे न बेठें वह हमारे भले के लिये काम करे तो ठीक है, वरन हमे उनके मनसूबो पर और काम नही करना है कि हम उन्हे सारी सुविधाये भी दे पर उनकी जबबादेही जनाता के प्रति बिलकुल न हो तो वह आपना रास्ता देखें। जनता के कोष का 80% नेताओ व जनता सेवको पर खर्च हो जाता है । आप यह सब पढने के बाद इस नतीजे पर अवश्य पहूचे होगे बदलाव की जरुरत तो है पर किन किन बातो पर आप सहमत है मुझसे या नही कह नही सकते तो शुरु कर दीजिये बदलाव के लिय काम । अगर आप अपने विचारो पर अमल करेगे तो वह आपके शब्द बन जायेगें वही बाद मे अपका कार्य बन जायगा, जो भविष्य मे आपकी आदत बन जायेगी जो आपका चरित्र कहलायेगा, अन्तोगत्वा यही आपकी नियती होगी । इस तरह आपकी नियती आपके अपने हाथौ मे होती हैं । देश मे आज एक आवज उठ रही है कि एक नये गांधी की जरुरत है, याद यह - गाना तुम मे ही कोई गांधी होगा प्यार की राह दिखा दुनिया को .....

उमेश रश्मि रोहतगी 24161 नीलन ड्राईव नौवी मीचिगन अमरीका 48375 USA
phone and fax:(248) 471-5786 12 फरवरी 2008
Email:rurohatgi@yahoo.com Web Page : WWW.rurohatgi.com